लेखनः मैक्सीन ट्रॉटर, चित्रः अनुष्का ग्रैवल गुलोष्को
भाषान्तारः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

इस अद्‌भुत कथा में किशोर वैन को एक विशाल सागौन के पेड़ के तले एक टहनी मिलती है। भगवान बुद्‌ध के आशीष से भरी इस टहनी से बनी छड़ी मानो वैन का ताबीज़ ही बन जाती है, जो वैन को उसके अतीत से जोड़े रखने के साथ उसके अनिश्चित भविष्य का सहारा भी बनती है। क्योंकि जब बदलाव की हवा बहती है, वियतनाम के घने जंगल भी सुरक्षित नहीं रहते। अपनी छड़ी और अदम्य साहस के सहारे ही वैन अपनी परिवार की सुरक्षा कर पाता है और उसे एक नए देश ले जाता है। शान्ति के आगामी वर्षों में पीतल की नोक से सजी इस छड़ी की ठक-ठक वैन को अपने रीति-रिवाज़ों, ध्वनियों और अपने उस देश की याद दिलाते रहते हैं, जिसे वह बेहद प्रेम करता था। जब छड़ी का लम्बा सफ़र समाप्त होता है, वैन की नातिन उसे घर वापिस ला बुद्‌ध के चरणों में अर्पित कर देती है।

छड़ी उन सबके प्रति श्रद्‌धांजलि है जो अगली पहाड़ी के परे देख पाते हैं।
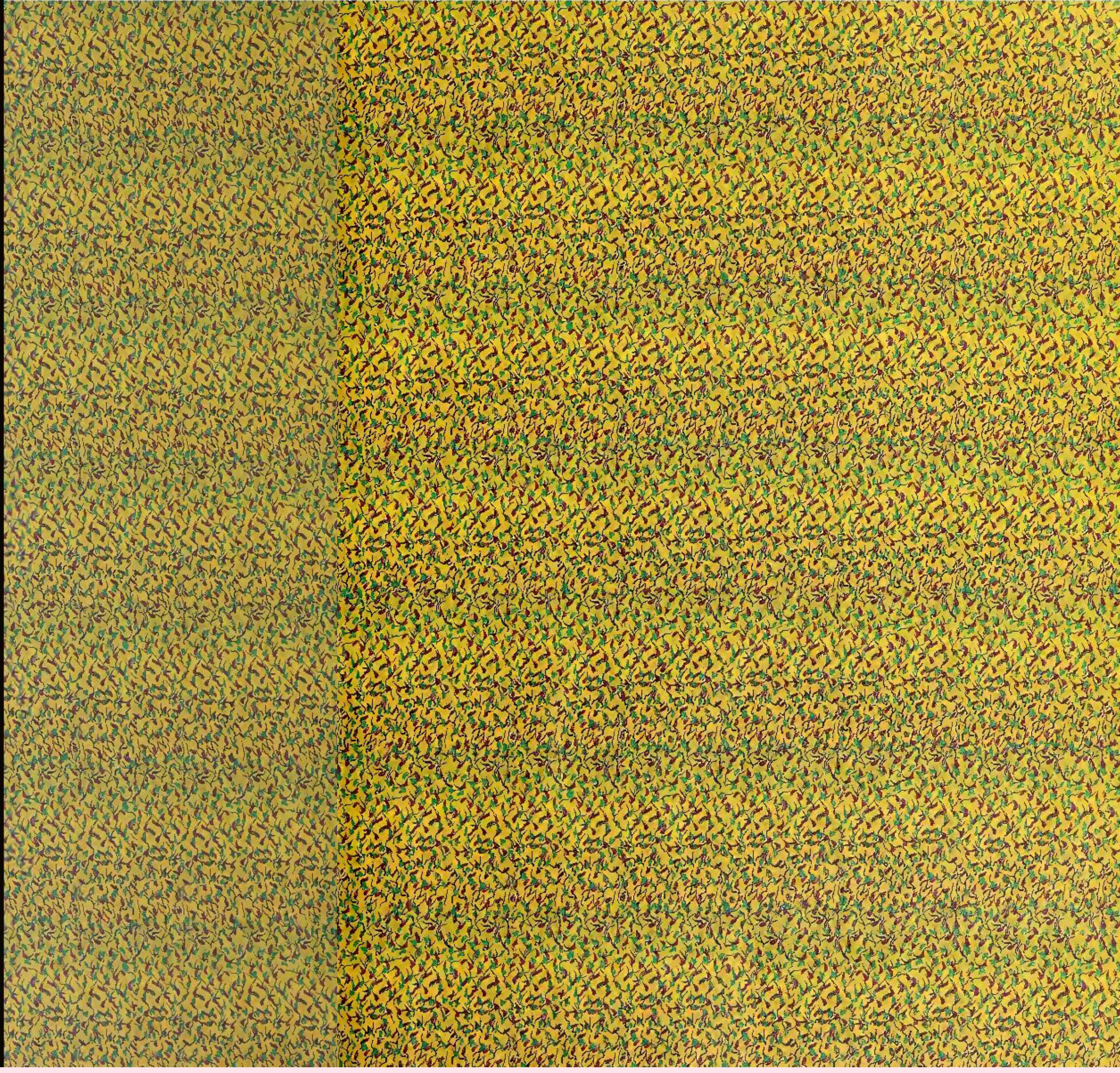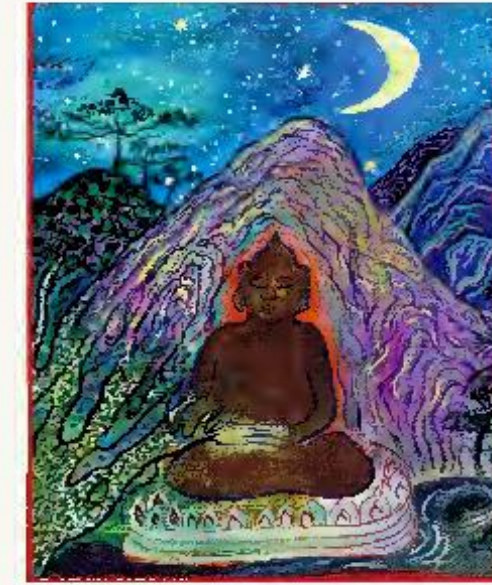
लेखनः मैक्सीन ट्रॉटर

चित्रः अनुष्का ग्रैवल गुलोष्को

भाषान्तारः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बर्न के लिए

- एम.टी.

उन सबके लिए जिनमें एक अलग पथ पर चलने का साहस था, उन के लिए जिनमें अकेले चलने की हिम्मत है, आज़ाद आत्मों, खास तौर से साशा के लिए, जो इस काम के दौरान लगातार मेरी साथ थी, और इसके खत्म होने पर पैदा हुई - एक श्रेष्ठ कृति।

ए.जी.जी.
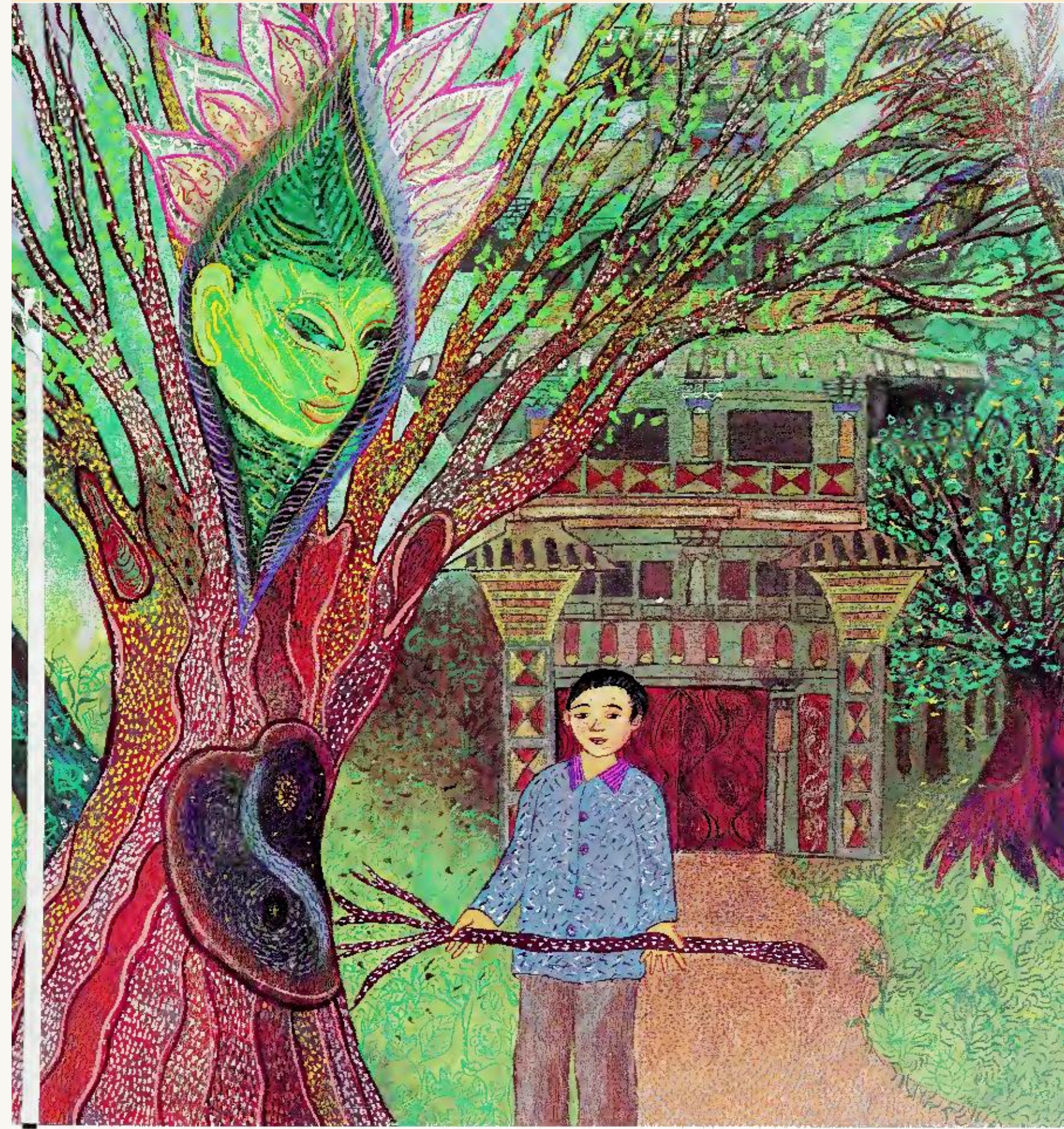
जब वैन छोटा ही था, उसे अपने देश वियतनाम के जंगल में घूमते हुए एक टहनी मिली। वह एक विशाल सागौन के पेड़ से गिरी थी। सागौन का वह पेड़ सैकड़ों सालों से एक बौद्ध मन्दिर के पास खड़ा था। मानसून की बारिश में उसकी एक-दो टहनियाँ टूट जाया करती थीं। पर पेड़ मौसमों के इन बदलावों के बावजूद अडिग व मौन खड़ा रहता था।

वैन टहनी को मन्दिर के अन्दर ले गया, जहाँ बौद्ध भिक्खु रहते थे। भिक्खुओं के सिर मुंडे हुए थे और नमी भरी गर्मी में चमकते थे। मुलायम चोंगा अपने गिर्द लपेटे वे प्रार्थना और जाप किया करते थे। इन भिक्खुओं में एक वैन के मामा थे।

"वह दूसरे लड़कों-सा नहीं है," वैन के मामा अक्सर सोचते। "वह ज़रूर अगले पहाड़ के परे जो है, उसे देख सकता होगा।"

मामा-भांजे, दानों ने मिल कर टहनी को साफ़ किया, उसे रगड़ कर चमकाया। वैन के मामा ने टहनी के नीचे पीतल का गुटका जड़ दिया। जब वे अपना काम कर चुके, टहनी चलने की छड़ी में तब्दील हो चुकी थी जो वियतनाम के सागौन के जंगलों के शान्त जीवन से दमक रही थी।

"तुम्हें यह छड़ी मन्दिर के पास भगवान बुद्ध की छाया में मिली," वैन के मामा बोले। "वे हमेशा तुम्हारी रक्षा करेंगे, तुम कहीं भी क्यों न जाओ, वे तुम्हें सुरक्षित घर वापस लाएंगे।"

वैन के लिए उसकी छड़ी बेशकीमती बन गई। वह घर से निकल जब भी अपने खेतों या बाज़ार जाता हर दिन उसका इस्तेमाल करता।

हर रात वह अपनी छड़ी को चमकाता, जब तक कि सागौन और पीतल दमकने न लगते।

सालों गुज़रे। वैन ने शादी की, समय के साथ उसके और उसकी पत्नी माई की एक बेटी हुई। उन्होंने अपनी बिटिया का नाम रखा लान। जब भी उत्सव-त्यौहार आते, पूरा परिवार मन्दिर जाता। नन्ही लान को अगरबत्तियों की महक और जाप करते भिक्खुओं की ध्वनियाँ बेहद पसन्द आतीं। वैन के मामा अब भी वहीं रहते थे। बेशक वे बेहद बूढ़े हो चले थे।

"आह वैन!" वे कहते, उनका चेहरा पोपली मुस्कुराहट से खिल जाता। "देख रहा हूँ कि तुम्हारे पास अब भी वह छड़ी है।"

मानसून से लेकर फसल कटाई तक ज़िन्दगी अच्छी गुज़रती थी, चावल भरपूर थे और ताड़ के पेड़ों में हवा भी। पर हवा कई चीज़ों को उड़ा भी सकती है।

जब युद्ध एकदम क़रीब आ गया, वैन को रात में जेट हवाई जहाज़ों की चीखें सुनाई दीं, उसने अपनी छड़ी उठाई। वह उंकड़ू बैठा और पौ फटने तक सोचता रहा। "हम यहाँ से चले जाएंगे," उसने अपने परिवार से कहा। और ठीक किया भी।

वे पहले अपने भैंसे से जुते छकड़े से चले। और जब ज़रूरी हो गया, वे अपना थोड़ा-सा सामान उठाए पैदल ही बढ़े। वे जंगलों से गुज़रे जिनमें घबराए परिन्दे और छोटे चमकदार चैकन्नी आँखों वाले बन्दर थे। उन्होंने बम से नष्ट किए गए धान के खेत और धुंआते गाँव देखे। वैन अपनी छड़ी को कस कर थामे अपने परिवार को वियतनाम से बाहर ले चला।

वे समुद्र के पास पहुँचे। वैन ने अपनी लगभग पूरी जमा-पूँजी समुद्र पार करने वाले जहाज़ की टिकटों पर लगा दी। सुरमई लहरें, जंग खाए जहाज़ को पूरब की दिशा में ले चलीं। वियतनाम के मन्दिरों की घंटियों और गहमा-गहमी से भरे बाज़ारों से दूर। वैन हाथ में छड़ी थामे जहाज़ की डेक पर खड़ा होता। रात को जब माई और लान सो जाते, वह जहाज़ की डेक पर ठंडे, कुछ न देखने वाले तारों के तले जार-जार रोता।

नए देश में जा कर बसना आसान काम नहीं था। वहाँ लगभग कोई भी वियतनाम की भाषा नहीं बोलता था। सड़कों पर साइकिलों की जगह मोटर गाड़ियाँ दौड़ा करती थीं। पर कम-से कम-जंग पीछे छूट चुकी थी। सो साल शान्ति से गुज़रते गए।

एक दिन एक नौजवान वैन के घर उसकी बेटी लान से मिलने आया। आगन्तुक के बाल पीले थे और चेहरे पर झाइयाँ थीं। पर उसकी नीला आँखों में लान को देख प्रीत झलक रही थी। जल्द ही लान ने उससे शादी की और बाद में उनकी एक बिटिया हुई। उन्होंने उसका नाम लिन रखा।
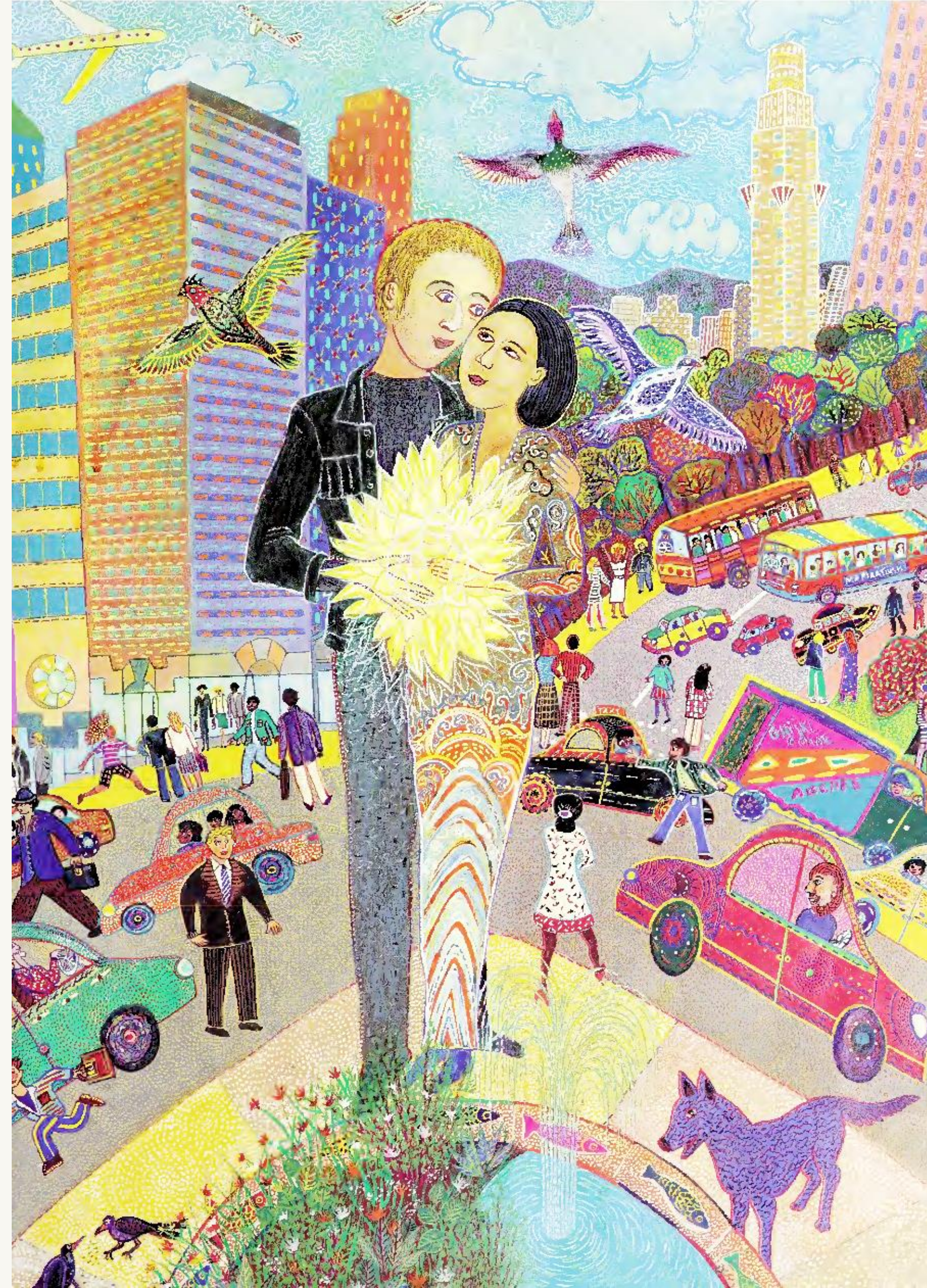
हर दोपहर वैन अपनी नातिन को ले अपने मुहल्ले की सड़कों पर चलता। उसकी छड़ी की पीतल की नोक पैदल-पथ पर ठकठकाती जाती। वैन, लिन को उस देश की कहानियाँ सुनाता जिसे वह छोड़ आया था। वह अपने मामा, बौद्ध मन्दिर और उसकी काई से भरी ठंडी दीवारों और शान्त बुद्ध के बारे में बताता।

लिन के ज़ेहन के अन्दर कहीं गहरे ये कहानियाँ छोटी लताओं-सी जड़ें पकड़ने लगीं। उनकी कोमल शाखाएं उसें दिल के गिर्द, छड़ी की ठकठकाहट के साथ लिपटने लगीं।

जब तक लिन बड़ी हुई, वैन बहुत बूढ़ा हो चुका था। लिन की आँखें अपने पिता जैसी नीली थीं और उसके बाल उसकी माँ जैसे रेशमी और सीधे थे। और उसके अन्तस में बसी थीं वे तमाम कहानियाँ जो उसने बचपन से अपने नाना से सुनी थीं।

"मैं आज लम्बा चलने जा रही हूँ, नाना," लिन ने एक शाम वैन से कहा। एक पल को हवा में अगरबत्ती की महक बिखरी और वैन को भिक्खुओं का सामूहिक जाप सुनाई दिया।

"मुझे अचरज नहीं बिटिया," वैन ने कहा। "तुम हमेशा से मुझे ऐसी बच्ची लगी, जो अगले पहाड़ के परे देखना चाहती हो।" और वैन ने अपनी छड़ी अपनी नातिन को सौंप दी।
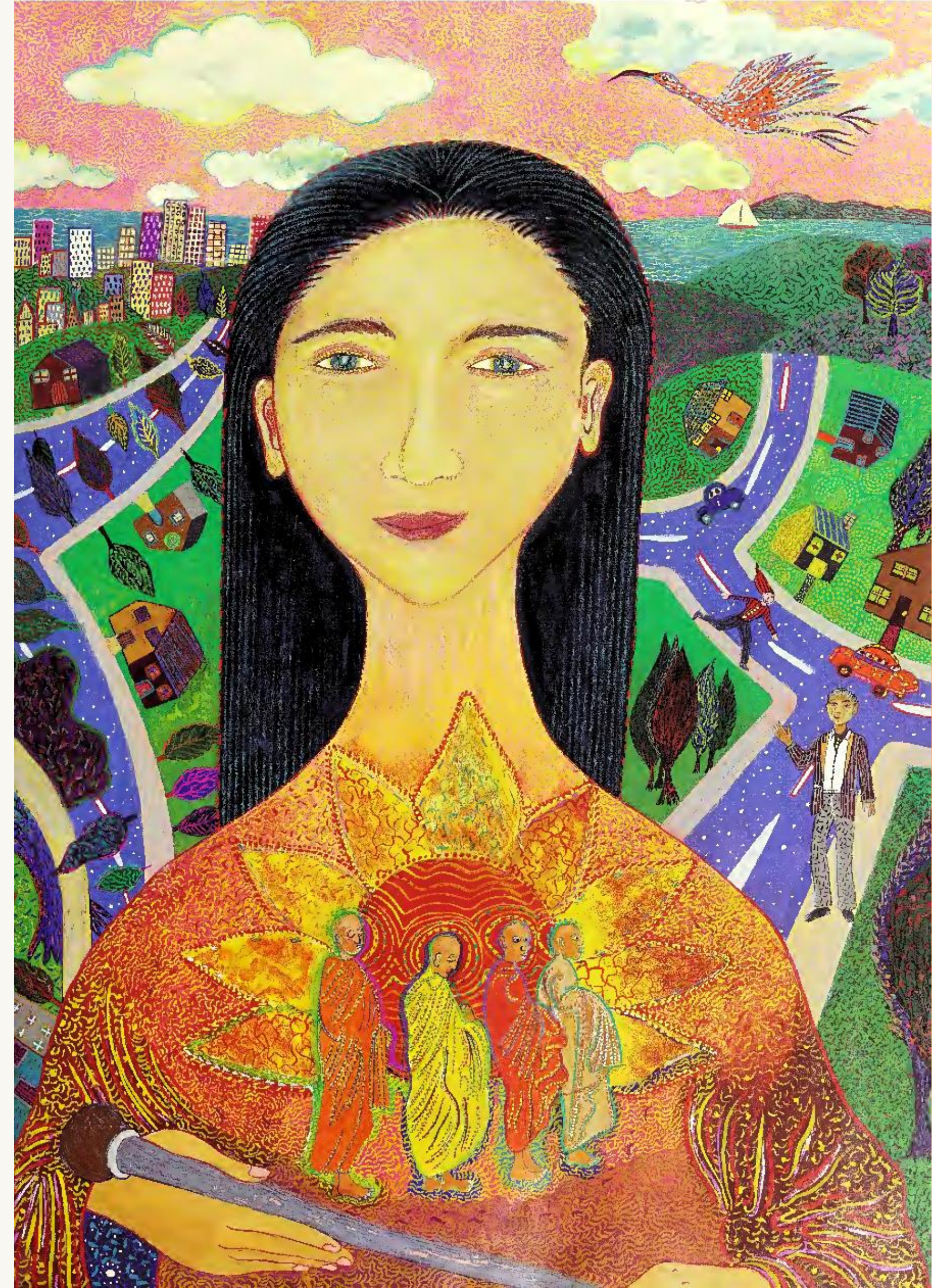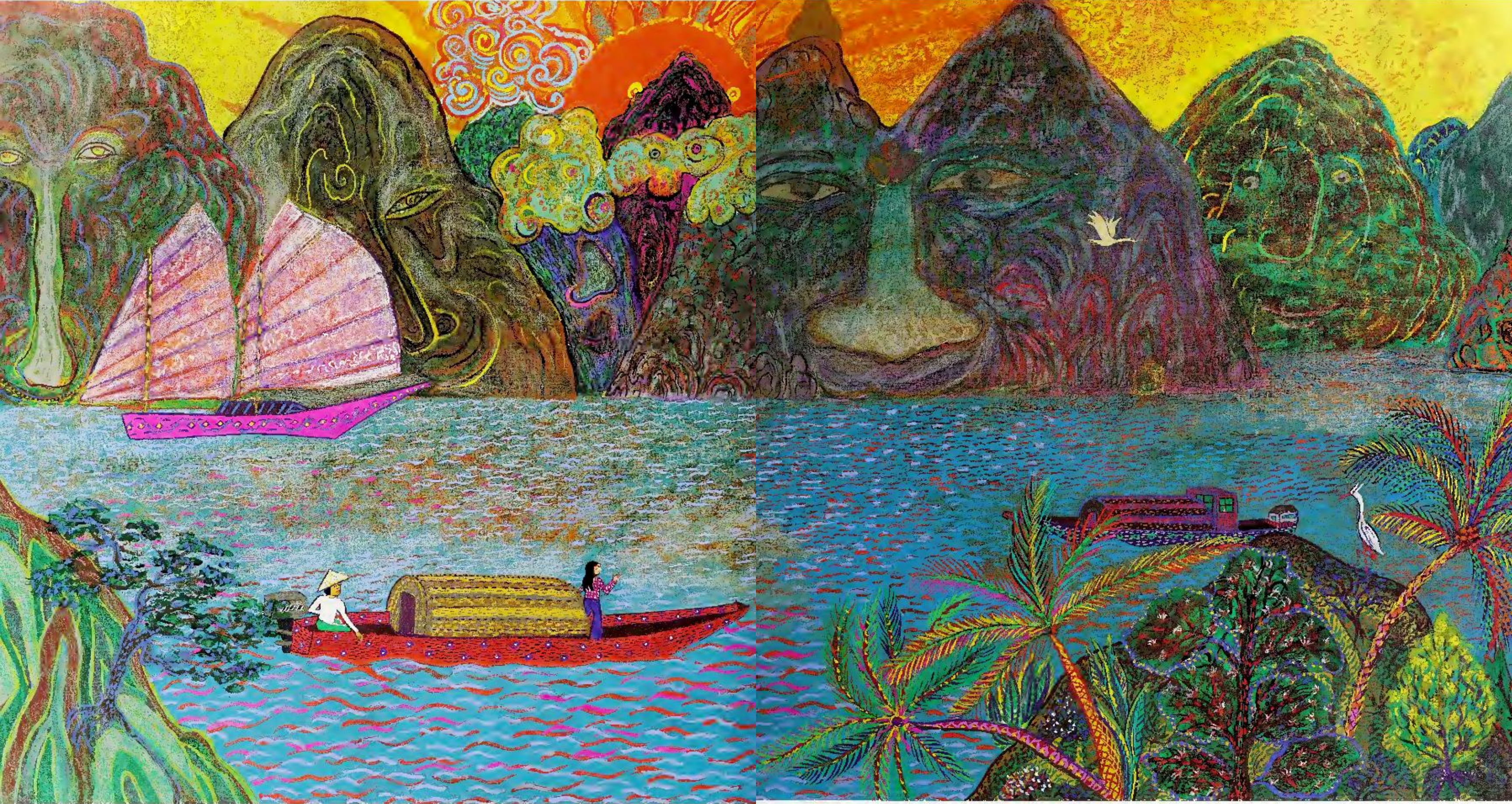
उस बसन्त लिन ने अपनी स्कूली पढ़ाई पूरी कर ली, और वह समुद्र पार एक सफ़र पर निकली। हर रात सूरज उस देश में डूबता जिसे वह घर कहती थी, और हर दिन उस देश में उगता जिसे उसका परिवार बहुत पहले छोड़ कर भागा था। कुछ समय बाद यह सफ़र खत्म हुआ और नदियों ने उसका स्वागत किया।

जिस समय लिन ने वियतनाम की धरती पर कदम रखा, सुबह हो रही थी। छड़ी को ज़मीन पर ठकठकाते हुए उसने चलना शुरू किया। चलते हुए उसने देखा कि मुर्गियाँ और मोटी तोंद वाले सूअर घरों के सामने खड़े थे। काफी समय चलने के बाद वह मन्दिर तक पहुँची।
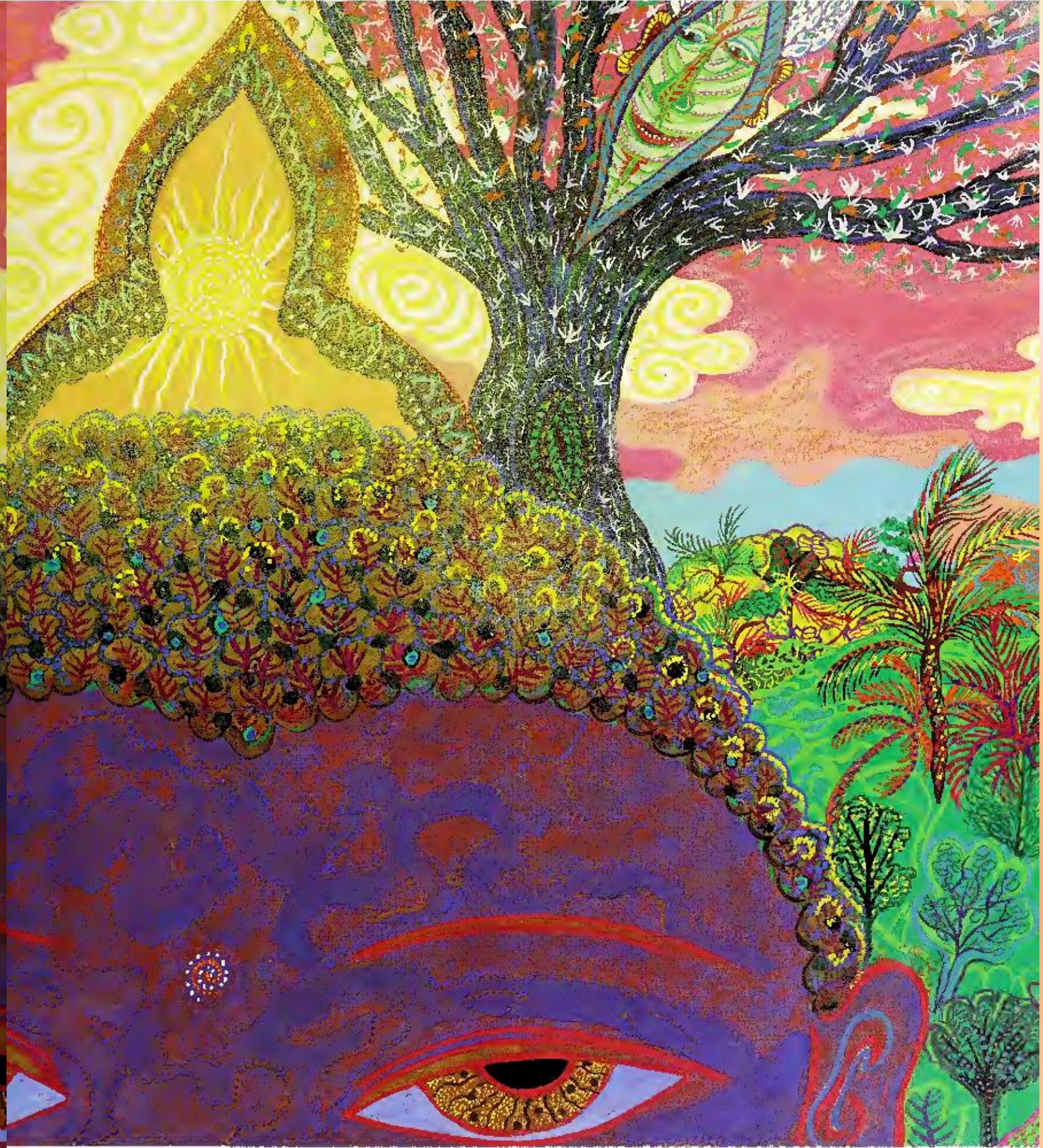
मन्दिर की दीवारों पर मुलायम काई थी और उसके गिर्द जंगल गा रहा था। पास ही एक विशाल सागौन का पेड़ था। वह मन्दिर में अपनी छड़ी हाथों में उठाए घुसी। छड़ी की पीतल की नोक की आवाज़ आख़िरकार मौन थी।

सामने बुद्ध खड़े थे, अब तक मुस्कुराते हुए। उनके चरणों में फल-फूल और प्रसाद का चढ़ावा रखा हुआ था, और शान्त हवा में अगरबत्ती की मीठी सुवास की स्मृति थी।

लिन ने अपना हाथ वैन की छड़ी पर फिराया। उसने भगवान को शुकराने की प्रार्थना बोली, जिसने लम्बे सफ़र के दौरान, सफ़र करने वालों की देखभाल की थी। लिन ने नाना की छड़ी बुद्ध के चरणों में रख प्रणाम किया। और तब वह पलटी और अपने घर लौटने को चल दी।

मैक्सीन ट्रॉटर अनेक सुन्दर बाल-पुस्तकों की रचयिता हैं। वे उन सभी में सांस्कृतिक सरहदों और समय सीमाओं को आसानी से लाँघती हैं। यह क्षमता उन्हें हरेक परिस्थिति और पात्र से व्यक्तिगत तादात्म्य बनाने देती है। मैक्सीन को कई सम्मानों से नवाज़ा गया है। इनमें कैनेडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन का बुक ऑफ द ईयर पुरस्कार शामिल है, जो उन्हें *टाइनी काइट ऑफ एडी वांग* के लिए दिया गया था। उनकी अन्य पुस्तकें हैं *एलिसन्स हाउस, पावलोवास् गिफ्ट,* तथा *प्रैरी विलो*। मैक्सीन एलीमेंट्री स्कूल की शिक्षिका हैं और पोर्ट स्टैनली, ऑन्टोरिओ में रहती हैं।

अनुष्का ग्रैवल गुलोष्को का जन्म मॉन्टरियाल में हुआ। वे फ्रेंच-कनेडियन व रुसी माता-पिता की सन्तान हैं। वे जब छोटी ही थीं, उन्होंने दस वर्ष विदेशों में बिताए और कई संस्कृतियों को अनुभव किया। बाल पुस्तकों के लिए उन्होंने जो चित्र बनाए वे बेहद प्रशंसित हुए हैं। उनकी स्वयं की लिखी व चित्रित पुस्तक *शो एण्ड द ड्रैगन्स् ऑफ द डीप* को कनेडियन गवर्नर जनरल्स् अवॉर्ड दिया गया। उन्हें अपनी कला रचनाओं पर विविध संस्कृतियों का प्रभाव आनन्द देता है। वे स्वयं को उन लोगों और स्थानों का राज-दूत मानती हैं, जो उन्हें प्रेरित करते हैं।